प्रसार एवं प्रचार सेवा का मुख्य उद्देश्य पुस्तकालय सेवाओं का अधिकतम विस्तार एवं प्रसार करना तथा पुस्तकालय सेवाओं का जन-जन तक सुलभ बनाना है। इसे इस प्रकार समझा जा सकता है।

प्रसार सेवा-

प्रसार सेवा से तात्पर्य पुस्तकालय की उन गतिविधियों से है जिसमे पुस्तकालय सेवा का विस्तार उन पाठकों तक किया जाता है जो पुस्तकलय तक किन्ही कारण से नहीं पहुँच पाते है, तथा पुस्तकालय का संदेश या उसके प्रति जिज्ञासा उत्पन्न करने में सहायता प्रदान करता है। जिस प्रकार हम अपने घर मे ही देखते है कि अगर किसी इलेक्ट्रोनिक समान के तार की पहुँच बिजली बोर्ड तक नहीं होती है तो वहाँ तक सेवा पहुंचाने के लिए प्रसार बोर्ड (Extension Bord) का उपयोग किया जाता है। उसी प्रकार अगर किसी क्षेत्र में पुस्तकालय सेवा नहीं पहुँच पता है तो वहाँ तक पुस्तकालय सेवा पहुंचाने के लिए प्रसार सेवा (Extension Service) का उपयोग किया जाता है। प्रसार सेवा के द्वारा अधिकतम लोगों को सेवा प्रदान कर डॉ० रंगनाथन के पुस्तकालय 61/191 सू का अनुशरण किया जाता है तथा अधिक से अधिक व्यक्तियों को सेवा प्रदा का निर्वाह किया जाता है। काल दायित

प्रचार सेवा-

प्रचार सेवा वह सेवा है जिसके द्वारा जिन उपयोगकर्ता या व्यक्ति को पुस्तकालय की जानकारी नहीं है या आधी अधूरी जानकारी है या पुस्तकालय के प्रति उदासीन है वैसे व्यक्ति को प्रसार सेवा के माध्यम से पुस्तकालय की गतिविधियों से परिचीत कराया जाता है।

पुस्तकालय सेवा का उद्देश्य अधिक व्यक्तियों को सेवा प्रदान करना, व्यक्ति से अच्छे सम्बंध बनाना, अधिक से अधिक पाठकों को अपनी ओर आकर्षित करना होता है और इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए प्रचार सेवा का सहारा लिया जाता है।

वर्तमान समय में संचार साधनों के उपयोग एवं इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों का अत्यधिक प्रयोग के चलते लोगों की पुस्तकालय में रूची कम होती जा रही है। प्रचार सेवा के माध्यम से लोगों में पुस्तकालय के प्रति रुची बढ़ाने का कार्य किया जा सकता है। पुस्तकालय के प्रचार के लिए परम्परागत तरीकों जैसे प्रदर्शनी, गोष्ठीयों पम्पलेट के अलावा आधुनिक तरीकों (इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों) जैसे रेडियो, टी० वी०, इंटरनेट, आदि माध्यमों का सहारा प्रचार सेवा के लिए कियाजा सकता है।

प्रसार एवं प्रचार सेवा के उद्देश्य एवं कार्य :-

प्रसार सेवा का मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित है:

(i) नये व्यक्तियों को पुस्तकालय से जोड़ना: प्रसार सेवा का सबसे प्रमुख उद्देश्य वैसे व्यक्तियों को पुस्तकालय से जोड़ना है जो पुस्तकालय के ग्राहक नहीं है। इसके लिए लोगों को पुस्तकालय के उपयोग से होनेवाले फायदे को बताना होता है। तथा पुस्तकालय संग्रह के बार में जानकारी देना होता है। प्रचार के माध्यम से वैसे लोग जो पुस्तकालय के ग्राहक नहीं है इसके फायदे को जानकर इससे जुड़ना चाहेंगे इसलिए प्रसार सेवा नये ग्राहकों को पुस्तकालय से जोड़ने के लिए जरूरी है।

(ii) पुस्तकालय के महत्व को बढ़ाना: प्रसार सेवा का मुख्य उद्देश्य पुस्तकालय के महत्व को बढ़ाना होता है, ताकि लोग पुस्तकालय के महत्व से प्रभावित होकर उसका उपयोग करना शुरू करे।

(iii) पुस्तकालय सेवा का विकास करना: इसके माध्यम से पुस्तकालय सेवा का विकास किया जाता है, जो लोग पुस्तकालय सेवा से अनभिज्ञ है। प्रसार सेवा के माध्यम से पुस्तकालय सेवा के उपयोग के लिए तैयार होते है।

(iv) पुस्तकालय विज्ञान के प्रथम तथा तृतीय सूत्र की रक्षा के लिए: प्रसार सेवा के माध्यम से पुस्तकालय विज्ञान के प्रथम और तृतीय सूत्र की रक्षा की जाती है। इसके माध्यम से पुस्तक का उपयोग बढ़ाया जा सकता है और प्रत्येक पुस्तक को उसका

प्रदान किया जाता है। (v) स्वस्थ मनोरंजक सामग्री उपलब्ध कराना: प्रसार सेवा के माध्यम से अधिकतम व्यक्तियों को पुस्तकालय से जोड़कर स्वस्थ मनोरंजन प्रदान किया जा सकता है क्योंकि अच्छी पुस्तकें काफी अच्छा मार्गदर्शक होती है और अच्छी पुस्तकों का अध्ययन कर लोगों का खाली समय का सदुपयोग किया जा सकता है।

प्रसार सेवा के माध्यम:

प्रसार सेवा के प्रमुख माध्यम निम्नलिखित है:-

1) मोबाइल पुस्तकालय : प्रसार सेवा का सबसे प्रमुख उद्देश्य वैसे व्यक्तियों को पुस्तकालय सेवा देना है जो पुस्तकालय तक पहुँच नहीं पाते है। इसके लिए मोबाइल पुस्तकालय सेवा महत्वपूर्ण होता है। मोबाइल पुस्तकालय सेवा के माध्यम से वैसे लोग जो पुस्तकालय तक पहुँच नहीं पाते है। उन तक पुस्तकालय सेवा पहुंचाया जाता है।

2) शाखा पुस्तकालय : प्रसार सेवा का सबसे प्रमुख उद्देश्य वैसे व्यक्तियों को पुस्तकालय सेवा देना है जो पुस्तकालय तक पहुँच नहीं पाते है। इसके लिए मोबाइल पुस्तकालय सेवा की तरह ही शाखा पुस्तकालय भी महत्वपूर्ण होता है। शाखा पुस्तकालय सेवा के माध्यम से वैसे लोग जो पुस्तकालय तक पहुँच नहीं पाते है तक पुस्तकालय सेवा पहुंचाया जाता है। इसके माध्यम से छोटे मोहल्ले मे भी पुस्तकालय की शाखा खोल कर सेवा प्रदान किया जाता है।

3मेले या त्योहारों मे स्टॉल लगाकर समय-समय पर पुस्तकालय द्वारा मेले या त्योहारों मे

स्टॉल लगाकर कर पुस्तकालय सेवा का प्रसार किया जा सकता है। मेले या त्योहारों मे स्टॉल लगाकर कर पुस्तकालय सेवा उन लोगों तक पहुंचाया जाता है जो पुस्तकालय तक पहुँच नहीं पाते, उन तक पुस्तकालय सेवा पहुंचाया जाता है।

प्रचार सेवा के माध्यम:

प्रचार सेवा के कई परम्परागत और आधुनिक माध्यम का सहारा लिया जाता है। प्रचार सेवा के प्रमुख माध्यम निम्नलिखित है:

1) इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के माध्यमों द्वारा प्रचार : पुस्तकालयों द्वारा इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों का

सहारा लेकर पुस्तकालय का प्रचार कार्य आसानी से किया जा सकता है। वर्तमान समय में रेडियो, टेलीविजन या इंटरनेट के माध्यमों से पुस्तकालय के संग्रह की जानकारी एवं अन्य सेवा आसानी से लोगों तक पहुँचायी जा सकती है।

2) प्रिंट मीडिया द्वारा: पुस्तकालय द्वारा अपनी सेवाओं का प्रचार समाचार पत्रों द्वारा भी किया जा सकता है। इसके अलावा पत्रिकाओं द्वारा भी किया जा सकता है।

3) पम्पलेट: पुस्तकालय द्वारा अपनी विभिन्न सेवाओं, प्रमुख पुस्तकों और प्रमुख गतिविधियों का पम्पलेट छपवाकर विभिन्न जगहों पर वितरीत कर पुस्तकालय का प्रचार किया जा सकता है, तथा लोगों को पुस्तकालय के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान की जा सकती है।

4) मेला और त्योहारों में पुस्तकालय द्वारा प्रदर्शनी लगाना: पुस्तकालय द्वारा विभिन्न मेला या

पर्वो में स्टॉल लगाना। पुस्तकालय द्वारा विभिन्न मेलों और त्याहारों में स्टॉलें लगाकर पुस्तकालय का प्रचार आसानी से किया जा सकता है। क्योंकि ऐसे समय में काफी भीड एक जगह एकत्रित होती है और सभी के पास काफी खाली समय होता है।

5) गोष्ठियों या कार्यक्रमों का आयोजन कर: पुस्तकालय द्वारा कई गोष्ठियाँ जैसे 'कवि सम्मेलन, साहित्य परिचर्चा इसके अलावा Quiz, निबंध प्रतियोगिता भाषण प्रतियोगिता आदि जैसे कार्यक्रमों का आयोजन किया जा सकता है। ऐसे कार्यक्रम करने से पुस्तकालय का स्वत: प्रचार हो जाता है।

6) प्रदर्शनी : समय-समय पर पुस्तकालय द्वारा पुस्तकों को प्रदर्शन कर पुस्तकालय का प्रचार किया जा सकता है। पुस्तक

प्रदर्शनी द्वारा लोगों को यह जानकारी मिलता है कि पुस्तकलायों में उनकी उपयोग के लायक पुस्तके उपलब्ध है या नहीं अगर किसी व्यक्ति कोखुद-ब-खुद पुस्तकालय से जुड़ना चाहेगा।

पुस्तकालय का प्रमुख उद्देश्य एवं कार्य अधिक से अधिक लोगों तक सेवा का प्रचार कर लोगों को पुस्तकालय से जोड़ना होता है और इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए प्रचार सेवा एक महत्वपूर्ण उपकरण की तरह कार्य करता है। डॉ० रंगनाथन द्वारा दिये गए पुस्तकालय विज्ञान के प्रथम सूत्र पुस्तक उपयोग के लिए है और तृतीय सूत्र 'प्रत्येक पुस्तक को उसका पाठक की रक्षा के लिए प्रचार सेवा आवश्यक हो जाता है क्योंकि कई बार ऐसा होता है कि पुस्तकालय में पुस्तक रहते हैं परन्तु पाठकों को उसका पता नहीं रहता। परन्तु प्रचार माध्यमों से व्यक्तियों को यह जानकारी प्राप्त होती है पुस्तकालय में उसके उपयोग हेतू पुस्तके उपलब्ध है, इस तरह प्रत्येक पुस्तक को उसके पाठक से मिलाया जाता है। इसके अलावा प्रचार सेवा के माध्यम से व्यक्तियों को पुस्तकालय के सेवा गतिविधियों की जानकारी प्रदान की जाती है।

प्रचार और प्रसार सेवा में अंतर

प्रसार सेवा से तात्पर्य पुस्तकालय की उन गतिविधियों से है जिसके द्वारा पुस्तकालय सेवा का विस्तार उन पाठकों तक किया जाता है जो पुस्तकलय तक किन्ही कारण से नहीं पहुँच पाते है, तथा प्रचार सेवा वह सेवा है जिसके द्वारा जिन उपयोगकर्ता या व्यक्ति को पुस्तकालय की जानकारी नहीं है या आधी अधूरी जानकारी है या पुस्तकालय कालय के प्रति उदासीन है वैसे व्यक्ति को प्रचार सेवा के माध्यम से पुस्तकालय की गतिविधियों से परिचीत कराया जाता है। प्रचार और प्रसार सेवा में अंतर को इस प्रकार स्पष्ट किया जा सकता है:-

प्रसार सेवा

प्रसार सेवा से तात्पर्य पुस्तकालय की उन गतिविधियों से है जिसमे पुस्तकालय सेवा का विस्तार उन पाठकों तक किया जाता है जो पुस्तकलय तक किन्ही कारण से नहीं पहुँच पाते है।

प्रसार सेवा द्वारा भौतिक बाधा मिटाई जाती है।

प्रसार सेवा का मुख्य माध्यम शाखा पुस्तकालय चल (मोबाइल) पुस्तकालय, आदि है।

प्रसार सेवा का मुख्य लक्ष्य उन पुराने पाठकों तक सेवा पहुंचाना है जो किन्ही कारणों से पुस्तकलय तक नहीं पहुँच पाते है।

प्रसार सेवा द्वारा पुस्तकालय सेवा को पाठकों तक पहुंचाया जाता है।

प्रसार सेवा में पुस्तकालय सेवा का प्रवाह पाठकों

प्रचार सेवा

प्रचार सेवा वह सेवा है जिसके द्वारा जिन

उपयोगकर्ता या व्यक्ति को पुस्तकालय की जानकारी नहीं है या आधी अधूरी जानकारी है या पुस्तकालय के प्रति उदासीन है वैसे व्यक्ति को प्रचारसेवा के माध्यम से पुस्तकालय की गतिविधियों से परिचीत कराया जाता है।

प्रचार सेवा द्वारा मानसिक बाधा मिटाई जाती है।

प्रचार सेवा का मुख्य माध्यम प्रदर्शनी, अखबार, पम्पलेट, रेडियो, आदि है।

प्रचार सेवा का मुख्य लक्ष्य उन नए पाठकों तक सेवा की जानकारी पहुंचाना है जो किन्ही कारणों से पुस्तकलय सेवा से अनभिज्ञ है।

प्रचार सेवा द्वारा पुस्तकालय सेवा की ओर पाठकों को आकर्षित किया जाता है।

प्रचार सेवा में पाठकों का प्रवाह पुस्तकालय

की ओर होता है।

सेवा की ओर होता है।

प्रसार सेवा का लक्ष्य पुराने पाठक होते है।

प्रचार सेवा का नए पाठक होते है।

_____MANISHA_____